International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 3; May 2018; Page No. 165-168

लखनऊ शहर के मलिन बस्ती निवासियों की सामाजिक प्रस्थिति का समीक्षात्मक अध्ययन

संतोष श्रीवास्तव[1], डॉ0 श्रीनिवास मिश्र[2]
[1] शोध छात्र (समाजशास्त्र), अ.प्र. सिंह वि.वि. रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।
[2] प्राध्यापक (समाजशास्त्र), शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अमरपाटन, सतना, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र लखनऊ शहर के मलिन बस्ती निवासियों की सामाजिक प्रस्थिति का समीक्षात्मक अध्ययन पर आधारित है। इस शोध पत्र के माध्यम से मलिन बस्तियों में सामाजिक प्रस्थिति, विकास हेतु विभिन्न योजनाओं का संचालन आदि का अध्ययन शामिल किया गया है। सामान्य अर्थों में क्षेत्रीय समूह गतिशीलता से आशय एक क्षेत्र या समुदाय को छोड़कर गॉव/नगर में जाकर बसने से है जबकि अन्तः व्यवसायी गतिशीलता से आशय एक ही प्रकार के व्यवसाय को छोडकर दूसरे व्यवसाय/रोजगार को अपनाने से लिया जाता है। विगत दशक से सामाजिक गतिशीलता में तेजी के लक्षण दिखाई देते हैं। मलिन बस्तियों में रैखिक एवं सामाजिक गतिशीलता के लक्षण कम हैं क्योंकि यहॉ की जनसंख्या अधिकांश अशिक्षित हैं। शोध क्षेत्र में 70.83 प्रतिशत मलिन बस्ती के अभिमतदाता, 68.33 प्रतिशत पाषर्द एवं 73.33 प्रतिशत आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के मतानुसार लखनऊ शहर के मलिन बस्ती निवासियों की सामाजिक प्रस्थिति अपेक्षाकृत संतोषजनक नही है।

मूल शब्द : लखनऊ शहर, मलिन बस्ती, रोजगार, सामाजिक प्रस्थिति।

प्रस्तावना
मानव जीवन की तीन मूलभूत आवश्यकताएं है – भोजन, वस्त्र और आवास। पौष्टिक भोजन, स्वच्छ वस्त्र तथा साफ–सुथरा आवास मानव की कार्यक्षमता एवं जीवन को सुचारू रूप से सक्रिय रखने के लिए न्यूनतम एवं वांछनीय आवश्यकताएं हैं। वर्तमान युग में मशीनरीकरण का युग है। औद्योगिकीकरण के जितने भी आयाम है, सब मशीन पर निर्भर हैं। लेकिन इन मशीनों की कार्यक्षमता को बनाये रखने अथवा अनुकूल दशाओं के विकास के लिए श्रमिकों का संतुलित एवं पौष्टिक आहार शरीर ढूंढने को पर्याप्त मात्रा वस्त्र और प्राकृतिक आपदाओं से सुरक्षित रखने के लिए स्वास्थ्यकर आवास की उपलब्धि नितान्त आवश्यक है। लेकिन औद्योगिक प्रगति के बाद आज श्रमिकों के आवास की व्यवस्था अच्छी नहीं है। उन्हें गंदी बस्तियों में ही रहना पड़ता है। अतः वर्तमान युग में गंदी बस्तियों की समस्या बनती जा रही है।

जहाँ तक भारत जैसे विकासशील देश का प्रश्न है, मलिन बस्ती की समस्या यहाँ अत्यधिक गंभीर है। लोगों को बुरी आर्थिक दशा के कारण यह बढ़ती हुई जनसंख्या, उन्नत तकनीकी और धीमी प्रगति से होने वाले औद्योगिकीकरण का ही परिणाम है। भारत में मलिन बस्ती का उदय कब हुआ, इसका निश्चित समय नहीं बतलाया जा सकता है, लेकिन जैसे–जैसे समय बितता जा रहा है नई–नई मलिन बस्तियों का विस्तार हो रहा है। इस प्रकार गन्दी बस्तियाँ प्रायः सभी बड़े नगरों में विकसित हुई है।

दुनिया में कोई ऐसा देश नहीं है जहाँ मलिन बस्ती की समस्या का निराकरण कर दिया गया हो। यद्यपि संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत रूस आर्थिक और तकनीकी रूप में उन्नत देश हैं, फिर भी सस्ते और स्वस्थ आवास व्यवस्था की समस्या विभिन्न उपायों को अपनाकर भी नहीं सुलझाया जासका है। 19वीं एवं 20वीं शताब्दी में विज्ञान, उद्योग और शिक्षा में अत्यधिक वृद्धि हुई। चिकित्सा विज्ञान ने व्यक्ति को दीर्घायु बनाया है। पिछले 100 वर्षों में संसार की जनसंख्या दुगुनी हो गयी है। भारत में जनसंख्या में भी तीव्र गति से वृद्धि हुई है। मलिन एवं गंदी बस्तियाँ मूलतः औद्योगिक नगरों एवं महानगरों की उपज है। यहाँ व्यक्तियों को छोटा–बड़ा काम मिल जाता है पर रहने को घर नहीं मिलता। इसलिए इन महानगरों को मलिन बस्तियों में शरण मिलती है।

उद्देश्य
शोध अध्ययन के महत्वपूर्ण उद्देश्य निम्नलिखित है–
- मलिन बस्तियों के सुधार के लिए अपनाई गई नीतियों पर स्थाई विश्लेषण करना।
- मलिन बस्तियों और उनकी प्रभावकारिता तथा उनके सुधार के लिए प्रावधान का उपाय खोजना तथा सेवाओं आदि के कार्यकाल का अनुदान औपचारिक आश्रय मानदण्ड की व्यवस्था करना।
- गंदी बस्तियों के सुधार के लिए वर्गीकरण एवं पहचान करना।

शोध परिकल्पना
शोध कार्य में परिकल्पना प्रक्रिया का दूसरा महत्वपूर्ण स्तम्भ है, जिससे समस्या समाधान को उचित दिशा मिलती है। विज्ञान में एक ही परिकल्पना को लेकर उसका परीक्षण करते हैं, किन्तु शैक्षिक अनुसंधान में अनेक परिकल्पनायें लेते हैं और प्रत्येक की सत्यता का परीक्षण करते हैं। अतः परिकल्पना का निर्माण समस्या की प्रकृति पर निर्भर है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी का पूर्वानुमान परिकल्पनाओं के रूप में निम्नवत् हैः–
1. शोध क्षेत्र लखनऊ शहर के मलिन बस्ती निवासियों की सामाजिक प्रस्थिति अपेक्षाकृत संतोषजनक नही है।
2. शोध क्षेत्र उ.प्र. शासन द्वारा मलिन बस्तियों के विकास हेतु विभिन्न योजनाओं का संचालन किया जा रहा है।

शोध विधि

शोध हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों ही प्रकार के समंकों का संकलन किया गया है। प्राथमिक समंक के संकलन हेतु अनुसूची/प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। मलिन बस्तियों के सामाजिक प्रस्थिति से संबंधित प्रत्येक पहलू को शामिल किया गया है। प्रारंभिक सर्वेक्षण के आधार पर उपयुक्त अनुसूची का परीक्षण कर उसकी वास्तविकता एवं सार्थकता की जांच की गयी। मलिन बस्तियों में सामाजिक प्रस्थिति से संबंधित सभी आवश्यक तथ्यों का समावेश हो। प्रस्तुत शोध कार्य उ.प्र. के लखनऊ शहर मलिन बस्तियों पर आधारित है। इसके अन्तर्गत लखनऊ शहर के मलिन बस्तियों को कुल छः जोन में विभक्त किया गया है। प्रत्येक जोन से 10 वार्ड एवं प्रत्येक वार्ड के पार्षद, आगनवाड़ी तथा 10–10 मलिन बस्तियों के लोगों का कुल 600 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार किया गया। एकत्रित किए गए प्राथमिक समंकों/स्त्रोतों में उच्च स्तर की शुद्धता प्राप्त करने के लिए प्रत्यक्ष व्यक्तिगत अनुसंधान पद्धति का सहारा लिया गया है।

शोध कार्य में द्वितीयक समंको के लिए सरकारी प्रकाशनों, अद्धशासकीय संस्थाओं के प्रकाशन, आयोग एवं समितियों की रिपोर्ट, अप्रकाशित स्त्रोत, साहित्य, दैनिक एवं साप्ताहिक समाचार पत्र, मासिक पत्रिकाएँ आदि से आंकड़े एवं तथ्य प्राप्त किये गए हैं।

पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने मलिन बस्तियों के सामाजिक प्रस्थिति पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – आप्टे, ड़ी.पी.(2006)[1], उपाध्याय रमेश (1996)[2], गोपाल ए. के. व दिनेश पाल (2007)[3], गुप्ता, एम.एल. (2010)[4], जोशी, ओमप्रकाश (2008)[5], पाण्डेय, एस.एस. (2008)[6], मिश्रा सरस्वती (1996)[7] और लवनिया, एम.एम. (2010)[8].

शोध का क्षेत्र – शोध का क्षेत्र सीमित है। प्रस्तुत शोध मलिन बस्ती निवासियों की सामाजिक प्रस्थिति का समाजशास्त्रीय अध्ययन लखनऊ शहर के विशेष संदर्भ से संबंधित है। इस प्रकार शोध प्रबंध लखनऊ शहर तक ही सीमित है। लखनऊ शहर की मलिन बस्तियों का अध्ययन करके निष्कर्ष ज्ञात किए गये है। इन मलिन बस्ती निवासियों की सामाजिक एवं आर्थिक क्रियाओं के साथ ही जीविकोपार्जन तथा संस्कारों एवं परंपराओं आदि का अध्ययन किया गया है।

शोध का महत्व – शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल लखनऊ शहर वरन् सम्पूर्ण उ.प्र. के मलिन बस्ती निवासियों की सामाजिक प्रस्थिति का समाजशास्त्रीय अध्ययन की वर्तमान स्थिति तथा उनमें आने वाली कठिनाइयों का आंकलन किया जा सकेगा तथा ऐसे सुझाव शोध कार्य के उपरान्त दिये जा सकेंगे जिनका प्रयोग कर राज्य शासन मलिन बस्तियों के निवासियों की वास्तविक प्रस्थिति का अध्ययन कर कठिनाइयों को दूर कर विकसित करने पर समर्थ हो सकता है।

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

किसी भी राष्ट्र के विकास एवं प्रगति के अपना सर्वाधिक योगदान देती है। परन्तु भारतीय सामाजिक ढ़ांचा ऐसा बना है जिसमें पुरुषों को महिलाओं की अपेक्षा अधिक महत्व दिया जाता है। महिलाओं को पुरुषों से कमतर बनाने में समय–समय पर ऐसी सामाजिक नीतियों एवं बंधन बनाये गये जो महिलाओं को सामाजिक स्थिति के दोयम दर्जे में पहुंचाता है। परन्तु वर्तमान में सरकार के सतत् प्रयास से महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति एवं स्तरीकरण में न सिर्फ सुधार हुआ है बल्कि वे पुरुषों से परस्पर बराबरी की भागीदारी करते हुए राष्ट्र के विकास में अपनी भूमिका निभा रही है। निःसंदेह लखनऊ शहर की मलिन बस्तियों की सामाजिक प्रस्थिति में परिवर्तन आया है। सरकार द्वारा सशक्तीकरण के लिए चलाये जा रहे कार्यक्रमों एवं योजनाओं से इनमें सामाजिक स्तरीकरण एवं गतिशीलता में व्यापक परिवर्तन देखने को मिलते हैं। इन मलिन बस्तियों में वर्तमान में शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास, पेयजल, बीमा, रोजगार आदि क्षेत्रों के प्रति जागरुकता बढ़ रही है। शासन की विभिन्न रोजगार परक एवं स्वरोजगार तथा कौशल विकास कार्यक्रमों से जागरुकता तथा अपने अधिकारों के प्रति सजगता बढ़ी है।

लखनऊ शहर के मलिन बस्तियों में सामाजिक स्तर को ऊँचा उठाने के लिए निरंतर प्रयासरत है। सर्वेक्षण से विदित होता है कि मलिन बस्तियों में विगत दशक से सामाजिक प्रस्थिति एवं स्तरीकरण में बदलाव/सुधार से आज वर्तमान में इनकी यह स्थिति नही रही जो उदारीकरण से पूर्ण थी।

सारणी 1 : शोध क्षेत्र लखनऊ शहर के मलिन बस्ती निवासियों की सामाजिक प्रस्थिति का अध्ययन

क्र.	जानकारी संकलन के स्रोत	न्यादर्श में चयनित संख्या	लखनऊ शहर के मलिन बस्ती निवासियों की सामाजिक प्रस्थिति अपेक्षाकृत			
			संतोषजनक है		संतोषजनक नही है	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	मलिन बस्ती के अभिमतदाता	600	175	29.17	425	70.83
2.	पार्षद	60	19	31.67	41	68.33
3.	आंगनवाड़ी	60	16	26.67	44	73.33
योग–		720	210	29.17	510	70.83

सारणी 2: काई वर्ग की गणना

आवृत्ति	संतोषजनक है	संतोषजनक नही है
F_o	210	510
F_e	360.00	360.00
F_o-F_e	-150.00	150.00
$(F_o-F_e)^2$	22500.00	22500.00
$\frac{(F_0-F_e)^2}{F_e}$	62.50	62.50

$$x^2 = \sum \frac{(F_0 - F_e)^2}{F_e}$$

$x^2 = 125.00$

df = (r-1)(c-1)

df = (2-1)(2-1)

df = 1

विष्लेषण : शोध क्षेत्र लखनऊ शहर के मलिन बस्ती निवासियों की सामाजिक प्रस्थिति के संबंध में जानकारी का संकलन कर काई वर्ग द्वारा सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया है। गणना द्वारा x^2 का मान 1df पर 125.00 है, जबकि तालिकामान 1df पर तथा 0.05 व 0.01 level पर क्रमशः 3.84 व 6.63 है। गणना द्वारा प्राप्त मान उपरोक्त दोनों के मान से बहुत अधिक है। अर्थात् शोध क्षेत्र लखनऊ शहर के मलिन बस्ती निवासियों की सामाजिक प्रस्थिति अपेक्षाकृत संतोषजनक नही है।

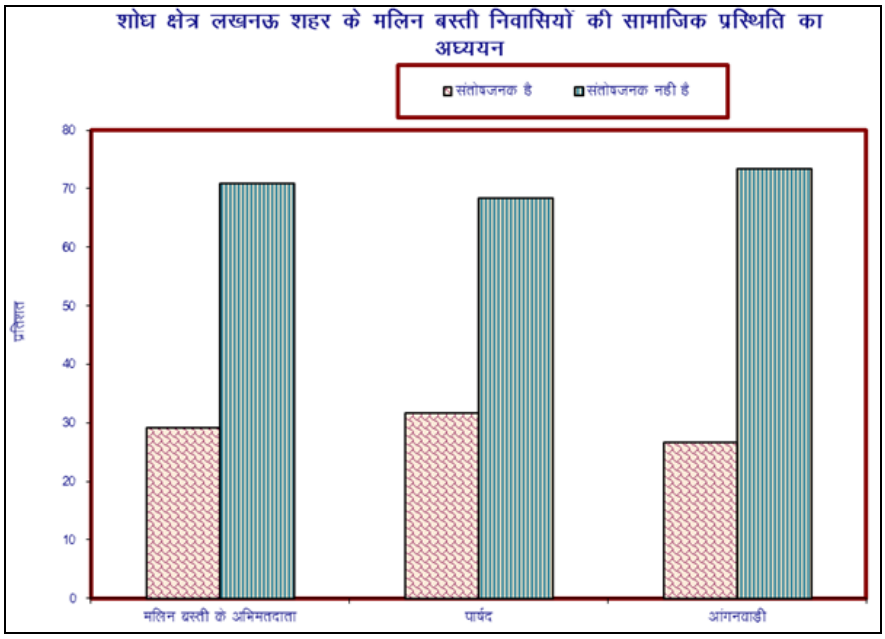

आकृति 1

व्याख्या : सारणी एवं काई वर्ग द्वारा संकलित प्रदत्तों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि अधिकांश मलिन बस्ती के अभिमतदाता, पार्षद एवं आंगनवाड़ी के अभिमतदाताओं का यह मानना हैं कि शोध क्षेत्र लखनऊ शहर के मलिन बस्ती निवासियों की सामाजिक प्रस्थिति अपेक्षाकृत संतोषजनक नही है।
अतः परिकल्पना क्र. 1 सत्यापित होती है।

सारणी 3 : शोध क्षेत्र में उत्तर प्रदेश शासन द्वारा मलिन बस्तियों के विकास हेतु विभिन्न योजनाओं का संचालन का अध्ययन

क्र.	जानकारी संकलन के स्रोत	न्यादर्श में चयनित संख्या	मलिन बस्ती निवासियों के विकास हेतु विभिन्न योजनाओं का संचालन किया जा रहा है			
			हाँ		नहीं	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	मलिन बस्ती के अभिमतदाता	600	440	73.33	160	26.67
2.	पार्षद	60	46	76.67	14	23.33
3.	आंगनवाड़ी	60	45	75.00	15	25.00
योग–		720	531	73.75	189	26.25

सारणी 4: काई वर्ग की गणना

आवृत्ति	हाँ	नहीं
F_o	531	189
F_e	360.00	360.00
F_o-F_e	171.00	-171.00
$(F_o-F_e)^2$	29241.00	29241.00
$\frac{(F_0-F_e)^2}{F_e}$	81.23	81.23

$$x^2 = \sum \frac{(F_0 - F_e)^2}{F_e}$$

$x^2 = 162.45$
df = (r-1)(c-1)
df = (2-1)(2-1)
df = 1

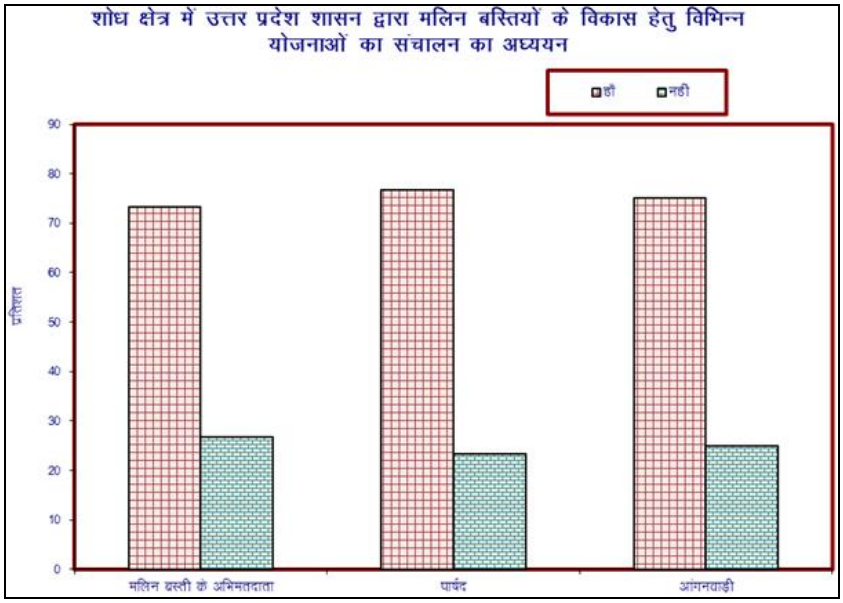

आकृति 2

विश्लेषण : शोध क्षेत्र में उत्तर प्रदेश शासन द्वारा मलिन बस्तियों के विकास हेतु विभिन्न योजनाओं का संचालन हो रहा है, के संबंध में जानकारी का संकलन कर काई वर्ग द्वारा सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया है। गणना द्वारा x^2 का मान 1df पर 162.45 है, जबकि तालिकामान 1df तथा 0.05 व 0.01 level पर क्रमशः 3.84 व 6.63 है। गणना द्वारा प्राप्त मान उपरोक्त दोनों के मान से बहुत अधिक है। अर्थात् शोध क्षेत्र में उत्तर प्रदेश शासन द्वारा मलिन बस्तियों के विकास हेतु विभिन्न योजनाओं का संचालन हो रहा है।

व्याख्या : सारणी एवं काई वर्ग द्वारा संकलित प्रदत्तों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि अधिकांश मलिन बस्ती के अभिमतदाता, पार्षद एवं आंगनवाड़ी के अभिमतदाताओं का यह मानना हैं कि शोध क्षेत्र में उत्तर प्रदेश शासन द्वारा मलिन बस्तियों के विकास हेतु विभिन्न योजनाओं का संचालन हो रहा है।
अतः परिकल्पना क्र. 2 सत्यापित होती है।

निष्कर्ष

लखनऊ शहर में निवासरत झुग्गीवासी अधिकांश गरीब, निर्धन, पिछड़ी सामाजिक समुदाय से हैं। इन झुग्गीवासियों में मुख्यरुप से क्षेत्रीय समूह गतिशीलता एवं अन्तः व्यवसायी गतिशीलता अधिक दिखाई देती है।
सामान्य अर्थों में क्षेत्रीय समूह गतिशीलता से आशय एक क्षेत्र या समुदाय को छोड़कर गॉव/नगर में जाकर बसने से है जबकि अन्तः व्यवसायी गतिशीलता से आशय एक ही प्रकार के व्यवसाय को छोडकर दूसरे व्यवसाय/रोजगार को अपनाने से लिया जाता है। विगत दशक से सामाजिक गतिशीलता में तेजी के लक्षण दिखाई देते हैं। मलिन बस्तियों में रैखिक एवं सामाजिक गतिशीलता के लक्षण कम हैं क्योंकि यहॉ की जनसंख्या अधिकांश अशिक्षित हैं।
शोध क्षेत्र में 70.83 प्रतिशत मलिन बस्ती के अभिमतदाता, 68.33 प्रतिशत पाषर्द एवं 73.33 प्रतिशत आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के मतानुसार लखनऊ शहर के मलिन बस्ती निवासियों की सामाजिक प्रस्थिति अपेक्षाकृत संतोषजनक नही है।
शोध क्षेत्र में 73.33 प्रतिशत मलिन बस्ती के अभिमतदाता, 76.67 प्रतिशत पाषर्द एवं 75.00 प्रतिशत आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के मतानुसार उत्तर प्रदेश शासन द्वारा मलिन बस्तियों के विकास हेतु विभिन्न योजनाओं का संचालन हो रहा है।

सन्दर्भ

1. आप्टे, ड़ी.पी. – सामाजिक आर्थिक सर्वेक्षण की प्रविधि– रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर, 2006
2. उपाध्याय रमेश – हमारे सामाजिक और सांस्कृतिक सरोकार, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1996
3. गोपाल ए. के. व दिनेश पाल – भारत में महिलायें सांख्यिकीय प्रोफाईल, राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान 5, सीरी इंस्टीज्यूशनल एरिया, नई दिल्ली, 2007
4. गुप्ता, एम.एल. – समाजशास्त्र– साहित्य भवन, आगरा, 2010
5. जोशी, ओमप्रकाश – भारत में सामाजिक परिवर्तन, रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर, 2008
6. पाण्डेय, एस.एस. – समाजशास्त्र, टी.एम.एच. प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008
7. मिश्रा सरस्वती– भारतीय स्त्रियों की प्रस्थिति, शारदा पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1996
8. लवनिया, एम.एम. – भारतीय महिलाओं का समाजशास्त्र– रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर, 2010